हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL6**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Chetan Kumar meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): _____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	5	4	8	0	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Chetan

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 145 टिप्पणी (Remarks): _____

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

संदर्भ/प्रसंग ⇒
निर्दिष्ट काव्यांश सामाजिक चेतना के पुरोधा व भाषा के डिक्टेटर कबीर की 'कबीरग्रंथावली' नामक रचना से उद्धरित है। यह 'गुरुदेव को अंग' नामक खंड से अवतरित है। जिसमें कबीर गुरुदेव की महत्ता तथा आराध्यतक पहुँचने में उनकी भूमिका का सर्वतोभद्र वर्णन करते हैं।

व्याख्या -
कबीर गुरु के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए उनके संदर्भ में कहते हैं कि सतगुरु द्वारा चलाये गये ज्ञान रूप तीर द्वारा उनके भीतर के भगत को भेद दिया है और ज्ञान से आलोकित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कर दिया है। वह प्रेम रूप तीर कबीर के शरीर के अंदर सना गया है जिसका विहितार्थ है कि प्रीति, मानवता, प्रेम सहृदयता जैसे भाव विस्तार से उसका अंतर्मन संपृक्त हो चुका है।

विशेष - (1) गुरु की महत्ता तो अन्य भक्त कवियों ने भी दर्शायी है, किन्तु उन्हें ईश्वर से भी दर्जा देते हैं और एक प्रसंग में कहते हैं कि "गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागूँ पाय" इस प्रकार वे गुरु को ईश्वर से भी अधिक ऊँचा दर्जा देते हैं।

(2) गुरु परंपरा उन्हें ~~सिद्ध~~ - नाथ परंपरा से विरासत में मिली है। नाथ भी गुरु महिमा को अभिव्यक्त करते थे - "गुरु होइओ दुआ लाल आदि"

(3) आज के दौर में जब योगापंथी बाबा व गुरुओं द्वारा समाज को छला जा रहा है, तब कबीर की पंक्तियाँ सच्चे गुरु की तलाश करने की राह दिखाती हैं।

6/10

Good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब ते बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

उपरोक्त काव्यांश कृष्ण प्रेम धारा के प्रतिनिधि कवि सूर के 'सूरसागर' से उद्धृत है। उपरोक्त पंक्तियों में उद्धव-गोपियाँ आपस में संवाद करते है और कृष्ण के मथुरा गमन से उपनी विरह पीड़ा को गोपियाँ अभिव्यक्त करती है।

~~गोपियाँ कहती हैं कि स.~~

राधा गोपियों से कहती है कि गोपियाँ वीणा बंद कर दे क्योंकि वीणा के कारण चांद के घोड़े खिंचे आ रहे है और रात को लेबी कर विरह को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

बता रहे हैं।

विशेष -: (1) वाग्विदग्धताघ विरह की अद्भुत अभिव्यक्ति की प्रशंसा शुक्ल जी ने की है।

(2) ब्रज भाषा का प्रौढ़ प्रयोग यहाँ हुआ है।

(3) ये पंक्तियाँ सर्वश्रेष्ठ विप्रलंभ काव्य होने का प्रमाण है

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

उपरोक्त काव्यावतरण आधुनिककाल के प्रगतिशील जनकवि 'नागार्जुन' की 'बादल को घिरते हुए देखा है' नामक कृति से अवतरित है। कवि नागार्जुन, जिस प्रकार 'कबीर' ने 'देखो कागद की देखी' कहकर अनुभव की प्रामाणिकता पर बल देते हैं, वैसे ही नागार्जुन भी अनुभव की प्रतिष्ठा करते हैं और अपनी अनुभव यात्रा में हिमालय से जुड़े कुबेर, कैलाश पर्वत पर शिव निवास, कालिदास का व्योम प्रवाही जल आदि की मिथकीयता का खण्डन करते हैं।

नागार्जुन कहते हैं कि पूर्ववर्ती कवियों ने हिमालय के संदर्भ में मनगढ़ंत कल्पनाएँ करके सच्चाई से मुँह मोड़ा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिमालय पर न तो कामायनी में बताये कैलाश पर्वत दिखता है, न ही कुबेर की अल्कापुरी और न ही कालिदास की यक्ष संबंधी कल्पना। वे कहते हैं हिमालय की इतनी ऊँचाई पर महज भीषण सर्दी व बादलों के गरजने की ध्वनियाँ दिखाई देता है। ये बादल महज प्राकृतिक बादल हैं जो प्राकृतिक कारणों से घिरते हैं। इसके अलावा किसी चीज का प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होता।

विशेष → (1) नागार्जुन कैलाश पर्वत संबंधी कालिदास की कल्पना की वास्तविकता पर संदेह एक कविता में इस प्रकार करते हैं -

" अमल धवल गिरि के शिखरों पर
कालिदास तुम कब साये थे
कालिदास सच सच बतलाना
रोये तुम या यक्ष रोये थे।

(2) कुछ समीक्षकों ने बादलों के घिरने को मार्क्सवादी क्रांति चेतना के बादलों से मतलब जोड़ा है तो किसी ने अभिजात्यवादी प्रकृति व संदर्भ वर्णन का आरोप लगाया है, किन्तु यह सच्चाई नहीं है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ...

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याख्येय उक्तियाँ प्रयोगवाद व नई कविता काव्यांदोलन के प्रतिनिधि प्रौढ़ चिंतक 'अज्ञेय' की सर्वश्रेष्ठ रचना 'असाध्यवीणा' से उद्धृत हैं। राजा की मूल समस्या इस कविता में वीणा के न सध पाने की है, किंतु प्रियंवद अपने 'व्यक्तित्व के विलयन' व 'अंतशून्यता' के कारण उस परम सृजनात्मक तक पहुँचना चाहता है, ताकि वीणा को साधने की अर्हताएँ व प्रक्रिया पूरी हो सके।

प्रियंवद एकदम मौन धारण कर अपने आपको महान 'रिक्त तट' रूपी परम सृजन तत्व से संयुक्त कराने की प्रक्रिया में अपने अहं का परित्याग कर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

याचक भाव से अहंसिद्धि करता है और उसे प्रतीत होता है कि महान सृजनतत्व अर्थात परंपरा के सामने वह कुछ नहीं है और अपनी तुच्छता का अहसास उसको तिष्ठित करता है। ~~वह कहता~~ उसे बोध होता है उसके पास जितने भी स्वर हैं, वे उसी परंपरा के हैं, उसे से तिरोभूत व आविर्भूत होते हैं, उन्हीं की अनुभूति व, प्रत्यक्षदर्शन व आत्मसाक्षात्कार से वह अपने को अत्यधिक उड़ान में पाता है।

विशेष :- (1) कविता में जेन बौद्धमत, इलियट के निर्वैयक्तिकता, परंपरा सिद्धांत का प्रभाव स्पष्टतः दिखता है, जो इन पंक्तियों में मूर्त रूप से परिलक्षित होता है।

(2) उपरोक्त काव्यांश में तद्भव शब्दों का प्रौढ़ प्रयोग कवि अज्ञेय की स्वनाशीलता की गहराई दर्शाता है। यहाँ स्पर्श व दृश्य बिम्ब स्पष्ट रूप से चित्रित होते हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
औ' बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया...

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ समाजवादी विचारधारा के प्रशस्त हस्ताक्षर 'मुक्तिबोध' की कविता 'ब्रह्मराक्षस' से उद्धृत हैं। कवि कहना चाह रहे हैं कि ब्रह्मराक्षस आत्मचेतस व विश्वचेतस के संघर्ष में पिसता रहा और समाज से कटकर अपनी सिद्धि करता रहा, इस तनाव विक्षिप्तता के साथ ही उसका अंत हो गया।

कवि कहते हैं कि ब्रह्मराक्षस को विश्वचेतस बनने पर 'कुछ आत्मकथाएँ भी 'अतिरिक्त' लगती हैं, किन्तु उसके निजी स्वार्थी 'आत्मचेतस' बने रहना चाहते हैं। इसी संघर्ष में वह तिल तिल पिस रहा है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जबकि उसका मूल दायित्व - मध्यवर्ग के ऐतिहासिक उत्तरदायित्व को निभाना है। दरअसल ब्रह्मराक्षस का ट्रेजिडी रूप में अंत का कारण यह है कि वह गणितीय प्रकार की आत्मपूर्णता चाहता था जो कि न संभव थी और दूसरा वह कोठरी में रहकर अपने आपस के व्यक्तित्वोत्तरण में लगा रहा और समाज में सक्रिय नहीं हो सका। यही उसके दुर्दान्त के कारण हैं।

विशेष - ① यहाँ ब्रह्मराक्षस स्वयं मुक्तिबोध हैं और अपने ऐतिहासिक दायित्व को निभाने के आत्मसंघर्ष में वे पिस रहे हैं।

② 'अंधेरे में' की भाषा में कहें, तो संघर्ष 'मैं' और 'वह' के बीच का है, कवि मैं से 'वह' की ओर जाना चाहता है।

③ कोठरी यहाँ ब्रह्मराक्षस के अंतर्जगत की प्रतीक है, जिसका मूर्त्यकरण फैंटेसी के कारण संभव है, वे 'जानदार' भाषा से बहुत से वर्णन से बचे हैं और यथार्थ को और गहराई से दर्शा पाते हैं।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्यवीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्यवीणा' कवि अज्ञेय की जीवन दृष्टि व काव्य दृष्टि की 'साध्य' व 'साध' है। असाध्यवीणा के जरिये वे सृजनतत्व के संदर्भ में अपनी व्याख्याएँ प्रदर्शित करते हैं।

सृजनतत्व के संदर्भ में पहली व्याख्या है- सृजनतत्व की अर्हता। अर्थात सृजन करने के लिए किन किन विशेषताओं का होना आवश्यक है। राजा के सभी कलावंतों की बुद्धि 'दर्प, चूर' हो जाती है और वे वीणा को नहीं साध पाते, किन्तु प्रियंवद में खास विशेषता है जिसके कारण वे वीणा से स्वरनिष्पत्ति करा पाते हैं, वह है - अहंशून्यता अर्थात् अपने व्यक्तित्व को सृजनतत्व में सानने घुला देने की क्षमता।

"मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं, वह अपने को शोध रहा था।

सृजनतत्व की अगली मान्यता है - सृजनतत्व की प्रक्रिया। इस संदर्भ में अज्ञेय का मत है कि सृजन सिद्धि के लिए अपने व्यक्तित्व को पूर्णता में समर्पित करना है और यह प्रक्रिया एकान्तिक हो सकती है, न कि समाजनिष्ठ। यहाँ अज्ञेय मार्क्सवादी चिंतन की समाजनिष्ठता संबंधी धारणा के विरुद्ध खड़े हैं।

सृजनतत्व के संदर्भ में अगला प्रश्न उठता है - सृजनतत्व का स्वरूप। वस्तुतः सृजनतत्व अपने आप में परिपूर्ण है, किसी प्रकार के प्यार, किसी प्रकार के ज्ञान व रचनाशीलता की अनंत 'महाशून्य', 'महामौन', 'अखंड' से निकलती हैं। यहाँ सृजनतत्व के संदर्भ में उसकी मान्यता बौद्धधर्म से प्रभावित

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मजा आती है, जो मानता है कि सभी प्रकार की वस्तुएँ चेतन तल पर ही होती हैं। और माध्यमिक शून्यवाद का मत है कि उसी महाशून्य बुद्धत्व से सभी का आविर्भाव व तिरोभूत होता है।

" महाशून्य
वह महामौन
जो शब्दहीन तल में गाता है।"
जिसमें होता है अखंड अशेष प्रकाश।"

सृजनतत्व के संदर्भ में अगली चर्चा है कि सृजनतत्व का प्रभाव कैसा होता है। यदि 'लोंजाइनस' की मानें में रहें, तो सृजनतत्व का प्रभाव 'सम्मोहनकारी' होता है, जिसमें कोई नहीं बच सकता। सृजन का यह प्रभाव उदात्त भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होता है क्योंकि इससे सभी के भावों का विस्तार होता है। राजा के चापलूसी, लोभ से विरक्ति मिल परमतत्व की ओर ध्यान लगाने की सीख मिलती है, तो रानी का आभूषण मोह खत्म हो एकनिष्ठ दायित्वमूलक प्रेम भाव जाग्रत होता है। यहाँ पर भी स्पष्ट है कि सृजनतत्व का प्रभाव अपने 'स्वहित' के अनुसार होता है। अपने 'स्वहित' से परिचय होते ही युग पलट जाता है -

"सब अलग अलग एकाकी पार तिरे
× × × × × ×
गुड़ गई सभा, सब अपने अपने काम लगे
युग पलट गया।"

स्पष्ट है कि सृजनतत्व की व्याख्या कवि अज्ञेय की महत्वपूर्ण काव्य सिद्धि है, जिस पर इलियट, जेनबौद्धमत का प्रभाव दिखता है, यद्यपि इस दौरान अपनी मौलिकता दर्शाने से भी अज्ञेय नहीं चूके।

बहुत अच्छा

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध की प्रत्येक कविता एक विशिष्ट भाव को लेकर चलती है, वह है- मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष। दरअसल मुक्तिबोध मार्क्सवादी विचारधारा के प्रतिबद्ध अध्येता हैं और अपने 'ऐतिहासिक दायित्व' को भी भली भाँति समझते हैं। इसलिए पूँजीवादी मोह व व्यक्तिवादी मोह को त्याग कर इस दायित्व को निभाने की छटपटाहट उनकी कविताओं में दिखती है।

'ब्रह्मराक्षस' ऐसी ही कविता है जहाँ यह आत्मसंघर्ष घनीभूत रूप में मुखरित हुआ है। कविता का मुख्य पात्र ब्रह्मराक्षस - तीसरी प्रकार का जीव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है, जिसमें आत्मचेतन व विश्वचेतन दोनों के भाव उपस्थित हैं। इन दोनों के बीच के संघर्ष ही मुख्य समस्या है -

"पिसता भला भीतरी आँख' बाहरी
दो पाटों के बीच
कैसी ट्रेजिड़ी है नीच।"

दरअसल ब्रह्मराक्षस का बाहरी मन है जो अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को ही तुष्ट करते रहने देना चाहता है, किन्तु उसका भीतरी पाट 'किंचित गहन सफलता, अति तीव्र असफलता' की संभावना के बावजूद अपने मूल व्यक्तित्व को पुनः पाना चाहता है और प्रयास करता है कि अपने व्यक्तित्व का त्याग कर समाज के दायित्वों का निर्वहन करे।

किन्तु ब्रह्मराक्षस अपने आत्मसंघर्ष से नहीं निकल पाता है और 'कोठरी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के भीतर किस तरह अपना गणित' करते ही मर जाता है।

ब्रह्मराक्षस की 'असफलता' का मुख्य कारण है कि वह गणितीय शुद्धता की तरह शत प्रतिशत अपने व्यक्तित्व का विलोपन कर के समाज निष्ठ होना चाहता है, किन्तु व्यावहारिक जीवन में 'अतिरेकवादी पूर्णता' को पाना नामुमकिन होता है, क्योंकि व्यक्तित्व का योगदान हर कार्य में न्यूनाधिक मात्रा में होता है।

दूसरा, वह अपनी सारी सिद्धि कोठरी के भीतर समाज से कटकर करता है। मार्क्स ने ऐसे दार्शनिक चिंतन को कमजोर बताया है। और समाज के निष्क्रिय रहकर ही वह आत्मसंघर्ष से निकल नहीं पाता।

कुल मिलाकर कहें, तो 'वह' तथा 'मैं' के रूप में छिड़े स्वयं मुक्तिबोध अपने आत्मसंघर्ष से लड़ते हैं, जो कि कविता के केन्द्रीय भाव है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन मूलतः मार्क्सवादी दृष्टिकोण के कवि माने जाते हैं। मार्क्सवाद की मान्यता के अनुरूप वे सौंदर्य की वस्तुनिष्ठ व्याख्या करते हैं और प्रत्येक आभिजात्यवादी सौंदर्य का नकार कर साधारण सौंदर्य की प्रतिष्ठा करते हैं, जैसा कि उनकी कविता 'अकाल और उसके बाद' में दिखता है जहाँ वह 'छिपकलिया की गश्त', 'काली कुतिया', 'कौवे का बुजलाना' आदि का वर्णन करते हैं।

किन्तु, 'बादल को घिरते देखा है' में नागार्जुन नये रूप में दिखते हैं, जहाँ उनकी शिल्प कौशल नये रूप में नजर आता है। इस तथ्य का वर्णन निम्न बिंदुओं में किया जा सकता है—

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(क) नागार्जुन के शिल्प कौशल की अद्भुत विशेषता यहाँ नज़र आती है, वह है, उनकी भाषा। अपनी अन्य कविताओं में सपाट बयानी व चलती हुई ती भाषा का प्रयोग करते हैं। किन्तु वे जड़ भाववादी नहीं, जो शिल्प संबंधी मान्यताओं से तटैव चिपके रहें। वे यहाँ औदात्य, तत्सम, परिष्कृत भाषा का इस्तेमाल करते हैं। जिसका नमूना है-

"अमल धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।"

(ख) शिल्प कौशल के संदर्भ में उनकी अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है - बिम्बात्मकता। यह कविता पूरी चलचित्र सा का अहसास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कराती है और किसी भी बिंब पांडित्य कवि को टक्कर देने में सक्षम है –

" महामेघ से झंझानिल से
गरज गरज निड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।"

(ग) शिल्प कौशल में उनका दृष्टिकोण भी अप्रतिम बन पड़ा है, वे प्रकृति के औदात्य पक्षों को अभिजात्यों की निजी मिल्कियत नहीं समझते बल्कि उसका साधारणीकरण कर आम जनता तक पहुँचाते हैं।

(घ) आधुनिककाल में जब छंदों का पालन छोड़ दिया, तब नागार्जुन इस कविता में 16 मात्राओं वाले छंद का प्रयोग करते हैं तथा ध्वन्यात्मकता का अद्भुत परिचय देते हैं।

कुल मिलाकर यह कविता अपनी विचारधारा की शिल्पशीलता को तोड़कर मंझे हुए रचनाकार व्यक्तित्व को सामने लाती है।

बहुत अच्छा

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' की काव्यभाषा का अनुशीलन करते हुए उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। 20

'असाध्यवीणा' कवि अज्ञेय की अति उत्कृष्ट काव्य सिद्धि व भाषा उपलब्धि है। अज्ञेय का भाषा संबंधी मत प्रगतिवादियों से एकदम अलग है और नही छायावादियों की तरह हवाबाजी वाला है। प्रगतिवादी मानते थे कि भाषा 'वस्तु' का उपोत्पाद मात्र है वहीं छायावादी कवि भाषा का उपयोग कल्पना एवं 'भावनाओं के वमन' में करते थे। किन्तु अज्ञेय को दोनो ही प्रवृत्तियाँ पसंद नहीं।

अज्ञेय भाषा को प्रथक अस्तित्व का दर्जा देते थे तथा भाषा को गूढ़ चिंतन के लिए जरूरी मानते थे। वे कविता को 'भाषिक संरचना' मानते थे। इसी संदर्भ में असाध्यवीणा उनकी भाषा का प्रतिनिधि उदाहरण बनती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

असाध्यवीणा की भाषा शब्दावली के स्तर पर तद्भवीकृत है। गद्य में जब वे चिंतन करते हैं, तो भाषा तत्सम हो जाती है, जिसका उदाहरण है - "वेदना में एक शक्ति है जो दृष्टि देती है।" वहीं जब पद्य में आते हैं, तो यही भाव 'दुख सबको माँजता है।" में परिणत हो जाता है। असाध्यवीणा में इसी कारण तद्भव प्रवृत्ति ज्यादा नजर आती है -

"उस त्रिचित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा,
वही अपने को शोध रहा था।"

किन्तु भाषा सहज तद्भवतक ही नहीं रुकती। तत्सम, देशज व विदेशी शब्द भी अपनी जगह पाते हैं - पक्षियों की चिहचाहट, गड़ुए की कैंचाट आदि ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। ये

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उदाहरण काव्य की ध्वन्यात्मकता को भी निरूपित करते हैं।

'असाध्यवीणा' की खास बात है - शब्दों की मितव्ययिता। यहाँ प्रत्येक शब्द चुन चुन कर रखा गया है, यहाँ शब्द मकान की ईंट के समान हैं जो मकानरूपी अर्थ ढाँचे को एक ईंट रूपी शब्द को हटाते ही ध्वस्त करने में सक्षम है। शुक्ल जी की भाषा में इसे 'गूढ़ गुम्फित भाषा' कहते हैं -

"तू उतर बीन के तारों में
अपने से गा, अपने को गा।"

असाध्यवीणा की एक अन्य खास बात है - भाषा के बल पर बिम्बों के जरिये चलचित्र का अहसास करा देने की क्षमता। जब वे किरीटी तरु के समक्ष

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आत्मसाक्षात्कार की स्थिति में होते हैं, तो लगता है मानो पाठक स्वयं प्रियंवद की जगह मौन होकर तरु के समक्ष उपस्थित है।

वस्तुतः अज्ञेय का भाषा संबंधी दृष्टिकोण इलियट के 'निर्वैयक्तिकता' व 'वस्तुनिष्ठ समीकरण' सिद्धांत से प्रेरित है। जो मानते हैं कि काव्य में सजग शिल्प का ध्यान रखना चाहिए तथा अधिकतम दूरी बनाए रखते हुए भाषा के जरिये अनुभूति को पाठक तक पहुंचाने का प्रयास किया जाए।

इसी संदर्भ में 'असाध्यवीणा' उन सभी भाषिक विशेषताओं को धारण कर पाती है जो कवि को भाषा सम्राट व सूक्ष्म भाष्य चिंतक बनाने के लिए नजीर पेश करती है।

काव्य-भाषा 'मौन' की अर्थवत्ता भी है

बहुत अच्छा

$11\frac{1}{2}$ / 20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस कविता में 'ब्रह्मराक्षस का शिष्य' कहता है -

" मैं ब्रह्मराक्षस का
सजल उर शिष्य होना चाहता हूँ

× × × × ×

उसको बतलाना उसका महत्व
उसकी महत्ता | "

उक्त पंक्तियाँ कविता की केन्द्रीय संवेदना को स्पष्ट करती हैं | 'ब्रह्मराक्षस' एक ऐसे व्यक्ति का प्रतीक है जो अपना ज्ञान अपने साथ ले कर चला गया, किन्तु ज्ञान को किसी योग्य शिष्य को स्थानान्तरित न कर पाने के कारण प्रेतयोनि में भटक रहा है | 'कवि सजल शिष्य' बनकर, उसको

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेतयोनि से छुटकारा दिलाना चाहता है।

वस्तुतः ब्रह्मराक्षस एक अव्यक्ति विद्वान चरित्र था, जिसे गाँधी, स्पेंसर, मार्क्स आदि के चिंतन 'सिद्ध अंत' मात्र प्रतीत होते थे। किन्तु उसने अपने आपको समाज से जोड़ने के लिए पूर्ण रूप से व्यक्तित्व विलोपन का उद्देश्य बनाया। किन्तु, 'अतिरेकवादी पूर्णता' का यह लक्ष्य असंभव था, इसलिए 'अतिमव्य असफलता' मिलना निश्चित था।

ब्रह्मराक्षस के जीवन की दूसरी अधूरी क्रिया यह थी कि वह 'किस तरह कोठरी में अपना गणित करता रहा' और इस कारण से 'पिस गया भीतरी और बाहरी दो रुग्न पाटों के बीच'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अर्थात् समाज के स्तर पर सक्रिय न होने के कारण जीवन में सफल न हो सका, केवल बौद्धिक चिंतन में ही उलझा रहा।

किन्तु, यहाँ मुक्तिबोध खुद 'सजल उर शिष्य' बनकर अर्थात् ऐसा शिष्य जिस में व्यक्तित्व हो तथा भावनाओं की उपस्थिति हो, ऐसे चरित्र को धारण कर ब्रह्मराक्षस को अपनी भूलों के बारे में बतलाना चाहता है। वह बतलाता है कि ब्रह्मराक्षस की व्यक्तित्वशीलता हेय का नहीं, गर्व का विषय है, जिनको समाज के स्तर पर सक्रिय कर वह अपनी अधूरी भूमिका को पूरी कर पाता और प्रेतयोनि से छुटकारा पाता।

दरअसल यहाँ मुक्तिबोध स्वयं ब्रह्मराक्षस न 'सजल उर शिष्य' की भूमिका में है जो जड़ मार्क्सवाद की पूर्णरूपेण व्यक्तित्वहीनता की प्रवृत्ति पर चोट कर रहे हैं।

बहुत अच्छा

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'हरिजन गाथा' नागार्जुन की दलित चेतना का जीवंत दस्तावेज है। नागार्जुन ने दलित शोषण को 'भोगा' तो नहीं था, किंतु अपनी संवेदनशीलता व समवेदना से को महसूस अवश्य किया। इसी कारण वे खेतिहरों कोड पर जमिन होकर कलम चलाने को बाध्य होते हैं।

हरिजन गाथा कि अंतर्वस्तु की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह इसलिए उठते हैं कि वे न तो गाँधीजी की तरह हृदय परिवर्तन के जरिये और न ही अम्बेडकर की तरह लोकतांत्रिक अधिकार प्राप्त कर दलित चेतना का हल निकालते हैं, बल्कि दलित चिंतन को मार्क्सवाद के साथ जुलाकर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'संपूर्ण क्रांति' का दर्जा देना चाहते हैं और हिंसक क्रांति के जरिये बदला लेने की राह दिखाते हैं।

कविता की अंतर्वस्तु मूलतः दलितों पर किए जाने वाले जातीय शोषण से जुड़ी है -

" ऐसा तो पहले नहीं हुआ था कि
एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं,
तेरह के तेरह अभागे
अकिंचन मनुपुत्र,
झोंक दिए गए हो आग में
× × × × ×
सौ सौ शक्तिशाली जाति वाले
मनुपुत्रों ने। "

कविता में दलित ~~चिंतन की~~ शोषण का बदला लेने के लिए क्रांति रूपी बच्चे का जन्म हुआ है और उसका प्रसंग कृष्ण के मिथकीय तथ्य से जोड़ा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह दलित चेतना पूरी वर्गीय होगी क्योंकि "सभी दलित माँओं के बच्चे अंतिम विप्लव में सहभागी होंगे।"

यह क्रांति पूरी तरह हिंसक होगी

'जनबल धनबल सभी जुटेगा
हथियारों की कमी न होगी।'

किन्तु प्रश्न उठता है कि भारत जैसे देश में क्या हिंसक क्रांति संभव है। यह बात सत्य है कि भारत की परिस्थितियाँ इसकी इजाजत नहीं देती, किन्तु दलितों पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए 'यह हिंसक क्रांति चेतना' निवारक उपाय अवश्य कर सकती है, इसी संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता है।

यहाँ 'संपूर्ण क्रांति चेतना' दरअसल 'महाभोज' की 'खतरनाक लपकती अग्नीलीक' की तरह है जो शोषण रुकने तक नहीं बुझेगी।

बहुत अच्छा

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है।

उद्धृत गद्यावतरण मार्क्सवादी चिंतक कवि पद्मपाल के प्रतिनिधि उपन्यास 'दिव्या' के मारिश-दिव्या संवाद से जुड़ा है। मारिश वैश्या बनकर अपने जीवन के कुछ वर्षों से बिता रहती। जीवन नीरसता से ऊबने लगती है, तब मारिश अपनी चार्वाक दृष्टि से जीवन को कायदे से ~~जी~~ जीने की प्रेरणा इस प्रकार देते हैं —

व्याख्या :- मारिश कहता है कि हे देवि जिस प्रकार तुम्हारे जीवन में अपार कष्ट आये हैं, वे जीवन के स्वाभाविक परिणाम हैं। ऐसे परिणाम आते रहते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी का नाम ही तो जिंदगी है। दुखों के पहाड़ पर ही व्यक्ति की अच्छाई - बुराई का पता चलता है क्योंकि सुख के समय तो सभी लोग स्वयंवश हमारे पास रहते हैं तथा सुख के समय जीवन की असल प्रवृत्तियां समझ नहीं आता। दरअसल सुख दुख जीवन के दो पहलू है जो समय के साथ आते रहते हैं तथा प्रकृति के अनुरूप मिलते चलते रहते हैं।

विशेष ⇒ ① प्रकृति की विपरीता का विचार बौद्धमत से प्रभावित है।

② पंक्तियाँ उद्घोषणा करती हैं कि मनुज होने का सीधा सा मतलब है कि सभी अच्छे बुरे को सहर्ष स्वीकार कर जीवन जीना।

5 1/2
10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ निबंध परंपरा के शिरोमणि आचार्य शुक्ल के चिंतामणि निबंध संग्रह के 'कविता क्या है' निबंध से उद्धृत हैं। यहाँ आचार्य शुक्ल कविता का महत्व बतलाते हुए मनुष्य पर उसके प्रभाव का वर्णन करते हैं।

व्याख्या :-

आचार्य शुक्ल कविता को भावयोग की संज्ञा देते हैं। उनका मत है कि सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य अपने मूल भावों से दूर होता गया है और अपने भाव अपने तक ही संकुचित कर लिए हैं। कविता हृदय की मुक्तावस्था का नाम है और यह मनुष्य को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसके मूल भावों से जोड़ने का प्रयास करती है। यह न केवल भावों को मूल प्रवृत्ति से जोड़ती है बल्कि भावों में गुणात्मक व मात्रात्मक विस्तार भी करती है। जो व्यक्ति कविता के उच्च रसास्वादन से युक्त हैं, वे जगत समाज के साथ अपने आप को आसानी से जोड़ लेते हैं क्योंकि पूरा समाज व जगत ही उनका अपना हृदयस्थल हो जाता है।

विशेष -: (1) कविता को भावयोग की संज्ञा देकर रागयोग से सरस बनाना और समाज से जोड़ना शुक्ल जी द्वारा भरत मुनि के रस का लोकमंगलीकरण कहा है।

(2) पंक्तियों में एक एक शब्द तराशकर रखा है जो दाएँ बाएँ होते ही अर्थ बदल जाता है। शब्दों की 'गूढ़ शक्ति परंपरा', चिंतनशीलता व भावों की वस्तुपरकता उन्हें वैज्ञानिक शैली से युक्त करती है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस संख्या के न लिखें।
(Please anything question this space

उपरोक्त गद्यांश प्रौढ़ निबंधकार आचार्य शुक्ल के सर्वाधिक चर्चित निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' से अवतरित है, जो कि चिंतामणि में संगृहित है। आचार्य शुक्ल इन पंक्तियों में श्रद्धा को परिभाषित करते हुए आगे चिंतन करते हैं कि श्रद्धा का मूल निबंध व्यक्ति के कर्मों के कारण होता है।

आचार्य शुक्ल स्पष्ट करते हैं कि श्रद्धेय होने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति के कर्म महान कोटि के हों तथा समाज के काम आने वाले हों, तब सहज ही लोगों की श्रद्धा का पात्र वह होगा। श्रद्धेय के चिंतनों पर लोगों की आसक्ति को देखते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अन्य लोग भी प्रेरित होकर ऐसे सत्कर्म करने को लालायित होते हैं। वह श्रद्धेय अपने कर्मों के कारण समाज में आकर्षण, सम्मान का केन्द्र होता है और विशेष महत्ता का भागी होता है।

विशेष :- (1) श्रद्धा होने के लिए शुक्लजी ने कर्मों का महान होना जरूरी बताया है, किन्तु प्रेम में ऐसी बंदिशें नहीं होती, वह बिना सत्कर्म के भी हो सकता है।

(2) शुक्लजी को विचारपरता व भावों की (कर्म व श्रद्धा) की वस्तुनिष्ठ जाप्या अहसास देती हैं मानो वे मनोवैज्ञानिक शोध से ऐसा कह रहे हों।

(3) शब्दों की गूढ़ गुम्फित परंपरा, वाक्यों की क्रमबद्धता व शब्दों की मितव्ययता उनकी वैज्ञानिक शैली का प्रमाण है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय–भारत–किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ महान नाटककार जयशंकर प्रसाद के कालजयी नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिखी गयी हैं। उपरोक्त प्रसंग धातुसेन की भारत भूमि प्रियता को व्यक्त करता है।

श्रीलंका का राजकुमार धातुसेन कहता है कि भारत केवल भारतीयों का ही नहीं है अपितु यह सबके हृदय में विद्यमान है। भारत की ज्ञान, धर्म व प्रकृति के प्रति मोह की प्रवृत्ति सब ओर है। मानवता व ज्ञान की ज्योति देखकर अन्य देशों के लोग खिंचे चले आते हैं। भारत केवल प्रेम का विषय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो सकता है, जिससे कोई भी समझदार व्यक्ति दूर होने की बात नहीं करेगा।

विशेष -: (1) ये कथन नवजागरण की प्रेरणा से जुड़े हैं। प्रसाद विदेशी पात्रों द्वारा भारतीय संस्कृति व इतिहास का गुणगान कराकर तत्कालीन भारतीयों की हीनता ग्रंथि दूर करना चाह रहे थे।

(2) गुप्त जी भी ऐसा ही प्रयास करते हैं, वे तो देवताओं को भी भारत के प्रेम-पाश में आबद्ध कर देते हैं। 'भारत भारती' में लिखते हैं -

" सुरलोक में भी देवगण गीत ऐसे गाते रहें
है धन्य भारतवर्ष वासी धन्य भारतवर्ष है।"

भारतेन्दु भी लिखते हैं -

" सबके पहिले जेहि धन बल दीना,
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीना।"

(3) प्रसाद की भाषा सधी हुई, परिमार्जित, परिष्कृत व सहृदय है, जो 'इक्केवालों' व 'खोपचेवालों' के लिए नहीं है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) सामन्ती बन्धनों के खत्म होने पर सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ अपने सहज रूप मे पल्लवित होंगी और नारी कवियों की नायिका मात्र न रह जाएगी। वह श्रम करने वाली, समान अधिकार वाली नागरिक भी होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त गद्यावतरण मार्क्सवादी समीक्षा के पितामह डॉ. रामस्वरूप शर्मा के समीक्षा निबंध 'तुलसी के काव्य में सामंतविरोधी मूल्य' से उद्धृत है।

इन पंक्तियों में तुलसी काव्य की समीक्षा करते हुए तुलसी पर लगे नारी विरोधी आरोपों को दूर करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि जब नारी के उपर लगे सामंती मूल्य व पुरुषवादी ढांचे के प्रतिबंध समाप्त हो जाएंगी, तो रीतिवादी कवियों की तरह नारी केवल भोग विलास व क्रीडा की वस्तु न रह जाएगी बल्कि प्रेम की सहज

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अभिव्यक्ति करने वाली समान अधिकारिणी व सौंदर्य की वास्तविक शुभेच्छु बनकर उभरेगी। तभी जाकर नारी के समान अधिकार मिलेंगे, समाज में भागीदारी मिलेगी और सही में नारीमुक्ति व नारी स्वतंत्रता का सपना पूर्ण होगा।

विशेष :- (1) मार्क्सवाद मानता है कि नारी पुरुष समकक्ष होते हैं, समाज की विभिन्न अस्मिताएँ उसे पुरुष के अधीनता खड़ा करती है। यहाँ अस्मिता रूपी सामंती मूल्यों को तोड़कर नारीसमानता की राह निकल सकती है।

(2) गौरलब्ध है कि रीतिवादी कवियों ने 'गुलीगुली गुल में गुनीजन है', 'हूठ्यो दैइठाम' आदि के जरिये महिला का वस्तुकरण किया जो, कि घोर सामंतीशीलता का उदाहरण है।

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "पांडित्य और लालित्य का विलक्षण संयोग आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध-कला की अन्यतम विशेषता है।" इस कथन के संदर्भ में 'कुहज' निबंध का विवेचन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ललित कला निबंध परंपरा के सर्वोत्कृष्ट हस्ताक्षर हैं। वस्तुतः भारतेन्दु काल से ही बालकृष्ण भट्ट, रामनिवास मिश्र व भारतेंदु ने ललित निबंध लिखे पर आचार्य शुक्ल के आगमन के पश्चात निबंधों से भावप्रियता गायब हो गयी और चिंतन की गरिष्ठता व विश्लेषण की समाहार क्षमता हावी होने लगे। आचार्य शुक्ल ने घोषित कर दिया कि वैचारिक प्रवृति के ~~भाव~~ मनोविज्ञान परक वैचारिकता वाले निबंध ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

ऐसे समय में आचार्य द्विवेदी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ने भावों को निबंध में पुनः प्रतिष्ठित करने व तर्क की जगह आत्मीयता, लोकप्रियता को प्रतिष्ठित करने का बीड़ा उठाया।

आचार्य द्विवेदी अपने निबंधों में पांडित्य का प्रदर्शन करते हैं। वे एक छोटे से विषय को लेकर चहुंमुखी और पांडित्य हिट फेंकते हैं। 'कुटज' जैसे छोटे से विषय से अपने जीवन से लेकर समाज राजनीति के पक्षों को मिला दिया। संस्कृत के प्रगाढ़ विद्वान होने व दर्शन व इतिहास में ~~कवि~~ कवि के चलते भारतीय संस्कृति, प्राचीन दर्शन, कालिदास, भवभूति आदि के साहित्य से तुलना करते हुए चलते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य द्विवेदी का लालित्य गुण तो अद्भुत बन पड़ा है। अपने व्यक्तिगत भावनाओं, जीवन के उदाहरणों व समाज की मनोवृत्ति से जोड़कर प्रेश करने से अद्भुत प्रकार का प्रवाह नजर आता है। वे भावनाओं की अकुंठ प्रवाह करते हैं, भावनाओं का विश्लेषण करते भी हैं, तो द्रवितता साथ लेकर। आचार्य शुक्ल की भाँति गूढ़ वैचारिक चिंतन की जगह, सौंदर्य, प्रकृति का मनोरम चित्रण, मानव-मानव संबंधों की पड़ताल करते हैं।

आचार्य द्विवेदी का पांडित्य व लालित्य विषय वैविध्य के स्तर पर भी दिखता है - एक ओर मन के भावों, व्यक्तिगत संबंधों, आत्मीयता, मानवता, दया, प्रेरणा आदि का अध्ययन करते हैं, तो साथ ही संस्कृति,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धर्म, दर्शन, विज्ञान, राजनीति आदि को भी विषय बनाते हैं।

पांडित्य व लालित्य का गुंफन वहाँ भी दिखता है जब राजनीति, संस्कृति, मानव संबंधों का गूढ़ चिंतन करते हैं, तो भाषा स्वाभाविक रूप से तत्सम, प्रतीकात्मक हो जाती है, वहीं आमोद प्रमोद, प्रेम, चुहलता के मूड में होने पर वर्णन लोकतत्वों, मुहावरों, तक पहुँचता है। संस्कृति संस्कृत के कठिन शब्दों से लेकर ठेठ भाषा के शब्दों का अद्भुत मिश्रण उनके निबंधों को विशेष पहचान देता है।

यह बात कहने में कोई हर्ज नहीं कि जिस प्रकार शुक्ल जी ने व्यक्तित्व को वैज्ञानिकता से जोड़कर, महान विचारपरक निबंध लिखे, वैसे ही आचार्य द्विवेदी ने पांडित्य को लालित्य में घुलाकर श्रेष्ठ ललित निबंधों को जन्म दिया।

बहुत अच्छा

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'श्रद्धा भक्ति' आचार्य शुक्ल जी का सर्वश्रेष्ठ मनोविकारपरक निबंध है जिसमें उन्होंने दो खण्डों में श्रद्धा एवं प्रेम तथा श्रद्धा व भक्ति के रूप में उदात्त मनोभावों का सूक्ष्म वैचारिक चिंतन किया है।

आचार्य शुक्ल सबसे पहले प्रेम व श्रद्धा में अंतर स्पष्ट करते हैं। वे प्रेम को व्यक्तिनिष्ठ, ऐंद्रीय, कम विस्तृत व कम महत्व का मानते हैं, वहीं श्रद्धा को वे समष्टिनिष्ठ, अतीन्द्रीय, अधिक विस्तृत व अधिक महत्व का मानते हैं।

उन्होंने श्रद्धा के तीन प्रकारों की चर्चा की है - शील संबंधिनी श्रद्धा, कृतज्ञता संबंधिनी श्रद्धा व गाढ़ा लगाव संबंधिनी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्रद्धा। इसमें वे शील संबंधिनी श्रद्धा को सर्वश्रेष्ठ माना क्योंकि इसका संबंध व्यक्ति की नैतिकता से जुड़ा है।

आगे चलकर भक्ति को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि "श्रद्धा और प्रेम का योग भक्ति है।" इनका मानना है कि जब श्रद्धेय के प्रति श्रद्धालु जिसमें वे गुण श्रद्धा हुई है, वे उत्कट व्यक्तिगत जीवन में रुचि लेने लगता है, तो भक्ति के बीज पनपते हैं। भक्ति में श्रद्धा के विपरीत कुछ न कुछ प्रतिदान व अधिकार की भावना होती है।

शुक्ल जी भक्ति संबंधी विवेचना में निर्गुण भक्ति के स्थान पर सगुण भक्ति को प्रतिष्ठित करते हैं और तुलसीदास

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का यत्न लेते हैं।

आगे वे श्रद्धा भक्ति के सामने उपस्थित खतरों की चर्चा करते हैं। वे कहते हैं कि दिखावटी तरीके से लोगों द्वारा श्रद्धा प्राप्त करने का प्रयास, पूँजीवादी युग में श्रद्धा का बिकना; श्रद्धांत होकर श्रद्धेय के गलत कामों का समर्थन खतरे हैं। वे इन उदात्त भावों का संबंध क्षात्र धर्म से जोड़ते हैं, जिनके पालनकर्ता राम व कृष्ण रहे।

मनोविकार पक्षों का इतना गंभीर चिंतन किया है कि मानो कोई मनोवैज्ञानिक कलम चला रहा हो, किन्तु शुक्ल जी साहित्यकार में मनोवैज्ञानिक पक्ष को बुलाते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'शुक्लजी गंभीर प्रकृति के मननशील व्यक्ति थे किन्तु निबंधों में स्थान-स्थान पर हास्य, व्यंग्य तथा विनोद की चुटकियाँ लेकर विषय को रंजक बनाया है।' विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शुक्ल जी का निबंध के संदर्भ में मानना था कि विचारात्मक निबंध सर्वश्रेष्ठ होते हैं। इसलिए वे व्यक्तित्व के समर्थक होने के बावजूद व्यक्तित्व की परिभाषा मान्टेन व डॉ. जॉनसन के विपरीत देते है और भावपरक की जगह संयमित अभिव्यक्ति वाले विचारपरक निबंधों को महत्व देते हैं।

मननशील व्यक्तित्व

(1) मनोविकारों का मनोवैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण

'श्रद्धा और प्रेम का योग भक्ति है।'

(2) शब्दों की कसावट, विचारों की क्रमबद्धता, शब्दों की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मितव्ययता जैसे वैज्ञानिक शैली के तत्व

हास्य व्यंग्य वालापक्ष

(1) हास्य :- 'बंदा के तो शायद बंदरिया के मुँह में ही सौंदर्य दिखता होगा।

(2) व्यंग्य → हितोपदेश के गधे ने तो तो क किन्तु ये लोग तो गधे की भाषा बोल लेते हैं।

(3) व्यक्तिगत उदाहरण →

(4) मुहावरे :- 'ढाई कोस नौ दिन में चलना' का प्रयोग।

प्रयास ठीक है
गहराई लाएँ
मांडल उत्तर पढ़ें

7/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation